न्याय का ईश्वर विचार

B.A. I (Hons) भारतीय दर्शन

ईश्वर की अवधारणा दर्शन की तत्वमीमांसीय समस्याओं में से एक रही है। दर्शन का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव आदि काल से ईश्वर के विषय में सोचता रहा है।

न्याय दर्शन ईश्वरवादी दर्शन है। यह ईश्वर की सत्ता में विश्वास करता है। न्याय दर्शन के संस्थापक महर्षि गौतम को माना जाता है। न्याय दर्शन जीवात्मा, ईश्वर एवं परमात्मा के रूप में ईश्वर को स्वीकार किया है और ये नित्य अज है। उदयनाचार्य ने कहा है कि न्याय का ईश्वर शरीरधारी है जो सत्-चित् आनन्द से युक्त है। इस परमात्मा को ईश्वर कहा जाता है। न्याय दर्शन यह मानता है कि ईश्वर ही विश्व का सृष्टि, पालन कर्ता और संहार कर्ता है। संसार की रचना वह नित्य परमाणु की सहायता से करता है। यह नित्य परमाणु देश, काल, मन और आत्मा हैं।

न्याय दर्शन यह मानता है कि ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिमान उसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। नैयायिकों ने ईश्वर की अवधारणा प्रस्तुत किया है। ईश्वर अपरिमित पूर्ण और दयालु है वह सभी कर्मों से मुक्त होकर भी अपने द्वारा रचे गये प्राणियों के लिए कार्य करता है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए न्याय भाष्य (4.1.21) में कहा गया है कि जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चों के लिए कार्य करता है उसी प्रकार ईश्वर प्राणियों के लिए कार्य करता है। वस्तुतः नैयायिकों का ईश्वर संसार का नैतिक शासक, सर्वशक्तिमान, सृष्टि-कर्ता को

नियंत्रण रखने वाला तथा जीवों को न्याय करने वाला वास्तविक फल दाता भी है। कर्म-न्याय का ईश्वर गीता में ईश्वर को साक्ष्य रखता है [illegible] कि जीवों कामनिकाम रूप से कर्म करते [illegible] कर्म का फल भी देता है।

ईश्वर सृष्टा और पालन कर्ता होने के साथ-साथ विश्व का संहर्ता भी है जिस प्रकार किसी के घर का नाश होता है उसी प्रकार विश्व का भी नाश होता है। जब ईश्वर विश्व में नैतिक और आध्यात्मिक पतन देखता है तब तब विध्वंसक शक्ति को द्वारा विश्व का विनाश करता है।

ईश्वर मानव का कर्म फल दाता है। मनुष्य के सभी कर्मों का नियामक ईश्वर है। जीवात्मा के शुभ तथा अशुभ कर्मों के अनुसार ईश्वर सुख और दुःख प्रदान करता है।

ईश्वर दयालु है वह जीवों को कर्म [illegible] के लिए प्रेरित करता है। गीता का ईश्वर व्यक्तित्व पूर्ण है जिनमें ज्ञान, क्रिया और आनन्द निहित [illegible]

ईश्वर के द्वारा ही मानव मोक्ष को प्राप्त करने में सफल होता है तब भक्त के आधार पर मानव मोक्ष की कामना करता है। गीता ईश्वर को अनन्त मानता है। ईश्वर गुणों से युक्त है जिनमें छः गुण अत्यन्त प्रधान है। इन छः गुणों को षडैश्वर्य के नाम से जाना जाता है आधिपत्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान एवं वैराग्य। ये गुण ईश्वर में पूर्ण रूप से व्याप्त है।

ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए आस्तिकों ने अनेक प्रमाणों का सहारा लिया [illegible]

① कारणात्मक तर्क — सब प्रथम ने आस्तिक [illegible]